उपदेश का स्वरूप

सूत्रधार _हम तीर्थधाम ज्ञानोदय के विद्यार्थी यह रूपक आचार्यकल्प पंडित टोडरमल जी द्वार रचित मोक्ष मार्ग प्रकाशक के आठवें अधिकार उपदेश का स्वरूप के आधार पर चार अनुयोगो के स्वरूप पर प्रस्तुत कर रहें हैं,जिसमे चार दृश्यों में माध्यम से क्रमशः अनुयोगों का प्रयोजन,व्याख्यान विधान, व्याख्यान पद्धति, दोष कल्पना का निराकरण प्रस्तुत किया है ।

आप सभी स्वाध्यायी जीवों ने निश्चित ही मोक्षमार्ग प्रकाशक का अध्यन किया होगा, इस रूपक के माध्यम से निश्चित ही आपका अभ्यास और दृण होगा।

(मंगलाचरण पूर्वक तीर्थंकर की दिव्यध्वनि से गणधर द्वारा **4** वेदों की उत्पत्ति होती है,चारों वेद अपनी उत्पत्ति का प्रयोजन क्रमशः प्रस्तुत करते हैं)

दृश्य 1

(प्रथम दृश्य में इंद्र द्वारा अनुयोगों के प्रयोजन की जिज्ञासा पर अनुयोग अपना प्रयोजन प्रस्तुत करते है)

इंद्र _ हे देव!इन चार वेदों की उत्पत्ति का क्या प्रयोजन है ?

प्रथमानुयोग _ मैं संसार की विचित्रता, पुण्य-पापका फल, महन्तपुरुषों की प्रवृत्ति इत्यादि निरूपण से जीवों को धर्ममें लगाऊंगा ।
जो जीव तुच्छबुद्धि हों वे भी मेरे द्वारा धर्म सन्मुख होंगे क्योंकि वे जीव सूक्ष्म निरूपण को नहीं पहिचानते, लौकिक कथाओं को जानते हैं, वहाँ उनका उपयोग लगता है। तथा मुझमें लौकिक प्रवृत्तिरूप ही निरूपण होने से उसे वे भली-भाँति समझ जाते हैं।
तथा लोक में तो राजादिककी कथाओ में पापका पोषण होता है। मैं महन्तपुरुष राजादिक की कथाएँ तो कहूंगा परन्तु प्रयोजन जहाँ-तहाँ पाप को छुड़ा कर धर्म में लगाने का का ही रहेगा,इसलिये वे जीव कथाओंके लालचसे तो मुझे पढ़ेंगे सुनेंगे फिर पाप को बुरा, धर्म को भला जानकर धर्म में रुचिवंत हो जायेंगे।

नैपत्थ _यह अनुयोग अवयुत्पन्न मिथ्यादृष्टि के अर्थ उत्पन्न हुआ अतः इसका नाम प्रथमानुयोग होगा।

करणानुयोग _ मैं जीवों के व कर्मों के विशेष तथा त्रिलोकादिक की रचना निरूपित करके जीवों को धर्म में लगाऊंगा । जो जीव धर्ममें उपयोग लगाना चाहते हैं वे जीवों के गुणस्थान-मार्गणा आदि विशेष तथा कर्मों के कारण अवस्था फल किस-किसके कैसे-कैसे पाये जाते हैं इत्यादि विशेष तथा त्रिलोक में नरक स्वर्गादिके ठिकाने पहिचान कर पाप से विमुख होकर धर्म में लगते है तथा ऐसे विचार में उपयोग रम जाये तब पाप-प्रवृत्ति छूटकर स्वयमेव तत्काल धर्म उत्पन्न होता है; उस अभ्यास से तत्त्वज्ञान की भी प्राप्ति शीघ्र होती है।
तथा मेरे अभ्यास से ऐसे सूक्ष्म यथार्थ कथन जिनमत में ही है, अन्यत्र नहीं, इस प्रकार महिमा जानकर जिनमत के श्रद्धानी होंगे।

नेपथ्य _इसमें गणित कार्य के कारण रुप सूत्र की व्याख्या होगी अतः यह करणानुयोग कहलायेगा।

चरणानुयोग _ मैं नाना प्रकार धर्म के साधन निरूपित करके जीवों को धर्म में लगाऊंगा। जो जीव हित अहित को नहीं जानते, हिंसादिक पाप कार्यों में तत्पर हो रहते हैं; उन्हें जिस प्रकार पापकार्यों को छोड़कर धर्मकार्यों में लगें, उस प्रकार उपदेश दूंगा; उसे जानकर जो धर्म आचरण करने को सन्मुख हुए, वे जीव गृहस्थधर्म व मुनिधर्म का विधान सुनकर आपसे जैसा सधे वैसे धर्म-साधनमें लगेंगे।

ऐसे साधन से कषाय मन्द होती है और उसके फल में इतना तो होता है कि कुगति में दुःख नहीं पाते, किन्तु सुगति में सुख प्राप्त करते हैं; तथा ऐसे साधन से जिनमत का निमित्त बना रहता है, वहाँ तत्त्वज्ञान की प्राप्ति होना हो तो हो जाती है।

नैपथ्य_ यह जीव को सम्यक आचरण की प्रेरणा देगा अतः यह चरणानुयोग कहलायेगा।

द्रव्यानुयोग _ मैं द्रव्यों का व तत्त्वों का निरूपण करके जीवों को धर्म में लगाऊंगा। जो जीव जीवादिक द्रव्यों को व तत्त्वों को नहीं पहिचानते. आपको परको भिन्न नहीं जानते; उन्हें हेतु-दृष्टान्त युक्ति द्वारा व प्रमाण-नयादि द्वारा उनका स्वरूप इस प्रकार दिखाऊंगा जिससे उनको प्रतीति हो जाये। उसके अभ्यास से अनादि अज्ञानता दूर हो जाए। अन्यमत कल्पित तत्त्वादिक झूठ भासित हो जाएं तथा जिनमत की प्रतीति हो जाए और उनके भाव को पहिचानने का अभ्यास रखें, तो शीघ्र ही तत्त्वज्ञान हो जाये।

नेपथ्य_ द्रव्यादि की मुख्यता से कथन करने के कारण यह द्रव्यानुयोग कहलायेगा।

देव_ श्री जिनेन्द्र की वाणी द्वारा उत्पन्न यह चारों अनुयोग अज्ञानियों के हितार्थ अत्यंत उत्तम है, परंतु क्या तत्वज्ञानी जीवों को भी इनसे कुछ प्रयोजन सिद्ध हो सकता है?

प्रथमानुयोग _
हां बिलकुल जिन जीवों के तत्त्वज्ञान हुआ हो, पश्चात् मुझे जो पढ़ें-सुनें तो उन्हें मैं उसके उदाहरणरूप भासित होऊंगा और धर्मात्मा धर्मात्माओं की प्रशंसा और पापियों की निन्दा जिसमें हो ऐसी किन्हीं पुराण-पुरुषों की कथा सुनने से धर्म में अति उत्साहवान होंगे ।

करणानुयोग _ जो जीव तत्त्वज्ञानी होकर मेरा अभ्यास करेंगे ,उन्हें मैं उसके विशेषणरूप भासित होऊंगा। जो जीवादि तत्त्वोंको आप जानता है, उन्हीं के विशेष में कहूंगा;
इस अभ्यास से तत्त्वज्ञान निर्मल होगा, तत्त्वोंके बहुत विशेष जाने तो निर्मल तत्त्वज्ञान होता है। तत्त्वज्ञान निर्मल होने पर आप ही विशेष धर्मात्मा होंगे।
हां एक बात और छद्मस्थ का उपयोग निरन्तर एकाग्र नहीं रहता; इसलिये ज्ञानी मेरे अभ्यासमें उपयोग को लगाएंगे।

चरणानुयोग _जो जीव तत्त्वज्ञानी होकर मेरा अभ्यास करेंगे उन्हें सर्व आचरण अपने वीतरागभाव के अनुसार भासित होंगे। एकदेश व सर्वदेश वीतरागता होनेपर ऐसी श्रावकदशा-मुनिदशा होगी।

द्रव्यानुयोग _ जिनके तत्त्वज्ञान हुआ हो वे जीव मेरा अभ्यास करें तो उन्हें अपने श्रद्धान के अनुसार वह सर्व कथन प्रतिभासित होते हैं।
जो मेरा अभ्यास करता रहे तो उसे तत्त्वज्ञान रहता है, न करे तो भूल जाता है। अथवा संक्षेपरूप से तत्त्वज्ञान हुआ था, वह नाना युक्ति-हेतु-दृष्टान्तादि द्वारा स्पष्ट हो जाये तो उसमें शिथिलता नहीं हो सकती। तथा इस अभ्याससे रागादि घटने से शीघ्र मोक्ष सधेगा।

सभी देव _साधो!साधो! यह चोरों अनुयोग जगत के मंगल हेतु अत्यंत मंगलकारी हैं।
(जा वाणी के ज्ञान तें.....)
प्रथम दृश्य समाप्त

द्वितीय दृश्य

अनुयोगों का व्याख्यान विधान

प्रथमनुयोग का व्याख्यान विधान

यवन **1** _भाई मुझे तो लग रहा था कि में राग रंग का प्रेमी व्यक्ति प्रथमानुयोग में जो राग रंग की बातें हैं उन्हें पढ़ कर आनंदित होऊंगा, लेकिन इनके अभ्यास से मेरी रुचि अब धर्म की ओर लगने लगी है ।
मेने प्रथमनुयोग में पढ़ा बड़े बड़े इंद्र तीर्थंकर के कल्याणक मनाने आते हैं उनकी भक्ति स्तुति आदि करते हैं, देखो कितने महान होते है तीर्थंकर भगवान।

यवन **2_** भाई मेने प्रथमानुयोग से जाना की उपवास का तत्काल बहुत फल प्राप्त होता है, नमस्कार मंत्र के स्मरण से शातिशय पुण्य बंध होता है,पाप कार्य से नीचगति प्राप्त होती है, इसीलिए मैं कभी पाप नहीं करुंगा।

यवन 3_ अरे भाई! देखो विष्णु कुमार ने कितना महान कार्य किया,ग्वाले को मुनि पर कितनी करुणा थी,महान बज्रकर्ण राजा ने देखो मुद्रिका में जिनबिंब को नमस्कार किया पर सिंहोदर को नही ।

यवन 4 _ कभी भी कोई आपत्ती हो तो जिनेन्द्र देव को स्मरण करना चाहिए उससे सभी फल प्राप्त हो जाते हैं।

देव 1_ हे देव इन लोगों ने जो अध्ययन किया है क्या वह सिद्धांत विरोध नहीं लगता,।?

यवन _ नहीं देव! प्रथमानुयोग के व्याख्यान का विधान ऐसा ही है , अज्ञानी जीवों को धर्म में लागने के अर्थ मूल प्रयोजन यथावत कहकर कुछ ग्रंथकर्ता अपने अनुसार वर्णन करते हैं, जहां जिसकी मुख्यता हो वहां उसी का पोषण करते हैं, अज्ञानी जीव बहुत फल दिखाए बिना धर्म में नही लगते अतः अन्य पाप कार्यों से बच कर धर्म मार्ग में जीव लगें यही प्रयोजन होता है।

करणानुयोग

यवन 1_ जैसा केवलज्ञान द्वारा जाना वैसा करणानुयोग में व्याख्यान है, जिस प्रकार वचनगोचर होकर छद्मस्त के ज्ञान में आए उस प्रकार संक्षिप्त कर के उपदेश देते हैं।
करणानुयोग में छद्यस्थों की प्रवृत्ति के अनुसार वर्णन नहीं किया है, केवल-ज्ञानगम्य पदार्थोंका निरूपण है। तथा किसी जीवके कषायोंकी अन्तरंग कषायशक्ति थोड़ी हैं, तो उसे मन्दकषायी कहते हैं। तथा किसी जीवके कषायोंकी अंतरंग कषायशक्ति बहुत है, तो उसे तीव्रकषायी कहते हैं । तथा कहीं उपदेशकी मुख्यता सहित व्याख्यान होता है, उसे सर्वथा उसी प्रकार नहीं मानना।

चरणानुयोग

यवन 2_चरणानुयोग में जिसप्रकार जीवों के अपनी बुद्धिगोचर धर्मका आचरण हो वैसा उपदेश दिया है। वहाँ धर्म तो निश्चयरूप मोक्षमार्ग है वही है, उसके साधनादिक उपचार से धर्म हैं। इसलिये व्यवहारनय की प्रधानता से नाना प्रकार उपचार धर्मके भेदादिकों का इसमें निरूपण किया जाता है: क्योंकि निश्वयधर्म में तो कुछ ग्रहण-त्यागका विकल्प नहीं है, और इसके निचली अवस्था में विकल्प छूटता नहीं है; इसलिये इस जीव को धर्मविरोधी कार्यों को छुड़ाने का और धर्मसाधनादि कार्यों को ग्रहण कराने का उपदेश इसमें है।
वह उपदेश दो प्रकार से दिया जाता है निश्चयसहित व्यवहार का उपदेश देते हैं। एक तो व्यवहारही का उपदेश देते है।

यवन 4 _ द्रव्यानुयोग मै जीवों के जीवादि द्रव्यों का यथार्थ श्रद्धान जिस प्रकार हो उस प्रकार विशेष, युक्ति, हेतु, दृष्टान्तादिक का द्रव्यानुयोग में वर्णन करते हैं, क्योंकि इसमें यथार्थ श्रद्धान कराने का प्रयोजन है। स्व-पर भेदविज्ञानादिक जिस प्रकार हों उस प्रकार जीव-अजीव का निर्णय करते है।
द्रव्यानुयोग में निश्चय अध्यात्म-उपदेश की प्रधानता हो, वहाँ व्यवहारधर्म का भी निषेध करते है।

व्याख्यान पद्धति

यवन _अरे भाई अब कोई इन सब की पद्धति को भी तो समझा दो।

देव[5]_प्रथमानुयोग में अलंकार शास्त्र और काव्य शास्त्रों की पद्धति मुख्य है।

देव [2]_करणानुयोग में गणित शास्त्रों की पद्धति मुख्य है।

देव [3]_चरणानुयोग में सुभाषित नीति शास्त्रों की पद्धति मुख्य है।

देव [4]_द्रव्यानुयोग में न्याय शास्त्रों की पद्धति मुख्य है।

यवन [5]_भाई व्याकरण, न्याय, छन्द, कोषादिक शास्त्र व वैद्यक, ज्योतिष, मन्त्रादि शास्त्र भी जिनमत में पाये जाते हैं। उनका क्या प्रयोजन है?

यवन [2]_अरे भाई! शास्त्रों को पढ़ने वाले लोग देश लोग देश देशांतर में बहुत हैं,उनकी भाषा भी अलग है, लेखक यदि अपनी जन भाषा में ग्रंथ लिखे तो अन्य भाषा वाले को उसका भाव कैसे ख्याल में आए,
व्याकरण आदि से सूक्ष्म अर्थ ख्याल में आता है , इसलिए व्याकरण न्याय से युक्त ग्रंथों की रचना कि।

यवन [6]_ मुझे तो वैद्यक शास्त्रों में रुचि थी ,यदि यह जैन धर्म में न होते तो इनके निमित्त में जैन धर्म में न लग पाता।

यवन [3]_ तभी तो मुनिराजों ने इन ग्रंथो का भी निर्माण किया हैं। हां लेकिन यदि कोई इन्हीं में अटक जाए तो ठीक नहीं।

अनुयोगों में दोष कल्पना का निराकरण

(सामान्य जन में अनुयोगों के संबंध में कुछ भ्रांतियां उत्पन्न होने लगी, जिनका उन्हे उत्तर भी बड़ी सुगमता से मिला)

यवन [1] _ मुझे नहीं पढ़ने प्रथमानुयोग के ग्रंथ इनमे श्रंगार संग्राम की बहुत बातें होती है।

यवन [2]_ सही कहा मित्र! ग्रंथो में रागादिक के निमित्त
कथन होने ही नहीं चाहिए।

यवन [3]_ भई में तो बहुत विरागी जीव हूं मुझे तो इन ग्रंथो का अध्यन करना बिलकुल योग्य नहीं है

यवन [4]_ हां साब! यदि इन्हें पढ़ने से हमे राग उत्पन्न हो गया तो, और दूसरों की कहानियों को पढ़के हम क्या करें।

इंद्र _ अरे भव्यों! प्रथमानुयोग ने कोई दोष नहीं है।
संग्रामादिक श्रंगारादिक का वर्णन बहुत करके अंत में उनकी असारता को ही बताया है,
और जैसे बालक को बताशे में औषधि देते हैं, उसी प्रकार रागी को भोग आदि के माध्यम से धर्म में रुचि लगाई है ।
और यदि तुम विरागी हो तो तुम्हे तो पता ही होगा की यहां इसी प्रकार कथन होते हैं,
अरे भाई ग्रंथो में तो जहां तहां धर्म का ही पोषण है,यदि तुम यहीं रागी हो गए तो अन्यत्र कहां विरागी हो पाओगे, और धर्मात्माओं की कथा सुनने से तो धर्म में ही रुचि लगती है।

सभी _ वाह! वाह! धन्य है प्रथमानुयोग ।

करणानुयोग दोष कल्पना

यवन _ करणानुयोग में वर्णित त्रिकोल आदि को जानने से क्या लाभ इससे अच्छा तो व्रत भक्ति कर लें या आत्मनुभव कर लें इससे अपना भला होगा ।

यवन ²_ अरे भाई करणानुयोग में कठनाई बहुत है , कौन इतना दिमाग लगाए।

देव _ सुनो ! व्रतादिक की अपेक्षा करणानुयोग के अभ्यास से अधिक कषाय मंद होती हैं,और वर्तमान राग तो घटता ही है आगामी राग आदि घटाने का कारण भी है ,और व्रतादि तो बाह्य निमित्त के साधन है ,लेकिन करणानुयोग अभ्यास अंतरंग निमित्त का साधन है ।
और यदि वस्तु शीघ्र जानने में आ जाए तो उसमे उपयोग नहीं लगता और उसकी महिमा भी नहीं आती ,और उत्साह भी नहीं रहता । और तू कह रहा है खेद होता है तो प्रमादि रहने में धर्म नही होता धर्म के लिए उद्यम करना पड़ता है।

चरणानुयोग दोष कल्पना

यवन _ चरणानुयोग में बाह्य व्रतादि साधन का उपदेश है उससे कुछ सिद्धि नही होती ,अपने परिणाम निर्मल होने चाहिए, इसलिए चरणानुयोग को नहीं पढ़ना चाहिए।

उत्तर _यदि बाह्यसंयम से कुछ सिद्धि न हो तो सर्वार्थसिद्धिवासी देव सम्यग्दृष्टि बहुत ज्ञानी हैं उनके तो चौथा गुणस्थान होता है और गृहस्थ श्रावक मनुष्यों के पंचम गुणस्थान होता है, सो क्या कारण है ? तथा तीर्थंकरादिक गृहस्थपद छोड़कर किसलिये संयम ग्रहण करें ? इसलिये यह नियम है कि बाह्य संयम-साधन बिना परिणाम निर्मल नहीं हो सकते; इसलिये बाह्य साधन का विधान जानने के लिये चरणानुयोग का अभ्यास अवश्य करना चाहिये।

द्रव्यानुयोग में दोष कल्पना का निराकरण

यवन ¹: द्रव्यानुयोग में व्रत-संयमादि व्यवहार धर्म का निषेध है, हीनपना बताया है, विषय भोगने से निर्जरा कही है, पढ़ने से स्वच्छंदी हो जावेंगे, पुण्य छोड़कर पाप में प्रवर्तन करेंगे। इसलिये इसे नहीं पढ़ना चाहिये।

उत्तर : गधा मिश्री खाकर मर जाता है, तो मनुष्य तो मिश्री खाना नहीं छोड़ते। उसी तरह विपरीत बुद्धि अध्यात्म ग्रन्थ पढ़कर स्वच्छंदी हो जाता है तो विवेकी तो अध्यात्म ग्रन्थ पढ़ना नहीं छोड़ते हैं। उसे स्वच्छंदता के दोष - नरक, तिर्यंच गति में जाने और वहाँ के दुख दिखाते हैं। यदि कोई स्वच्छंद होता है तो वह ग्रन्थ का दोष नहीं है, उसी जीव का दोष है।

भाई यह काल साक्षात् मोक्ष न होने की अपेक्षा निकृष्ट है, आत्मानुभवनादिक द्वारा सम्यक्त्वादिक होना इस काल में मना नहीं है; इसलिये आत्मानुभवनादिक के अर्थ द्रव्यानुयोग का अवश्य अभ्यास करना।

यवन _ अहो! हमने अपनी अज्ञानता वश जिनवाणी पर मिथ्या दोष लगाया ,अरे यह जिनवाणी तो महान पुण्य के उदय से हमे मिले है ,इस पंचम काल में जिनदेव के विरह में भी आचार्यों ने नाना युक्तियों द्वारा जैसे बने तैसे हम अज्ञानियों को धर्म में लगाने के लिए इन ग्रंथो की रचना की ।
(इस दुखम पंचम काल में .....)

यवन 2_ धन्य है वे महान पंडित टोडरमल जी जिन्होंने अत्यंत सरल भाषा में हमे अनुयोनों का स्वरूप समझाया,
समयसार के साथ इन्हीं के ग्रंथ को पड़ कर ही तो अध्यात्म सत्पुरुष श्री कांजी स्वामी ने मिथ्या मत को त्यागकर और अध्यात्म की गंगा को जन जन तक पहुंचाया जिसके प्रभाव से दादा डॉक्टर हुकमचंद भारिल्ल, बाबू जुगलकिशोर जी युगल,पंडित बाबूभाई मेहता, पण्डित हेमचंद जी हेम जैसे अनेक विद्वान हुई और वर्तमान में इन्ही के निमित्त लाखों लोग तत्व ज्ञान से जुड़ रहे हैं।
पूज्य गुरुदेव श्री की प्रेरणा से ही जयपुर में आचार्यकल्प पंडित टोडरमल जी के नाम से महावद्यालय प्रारंभ हुआ और वहां से आदरणीय पंडित अभयकुमार जीआदरणीय वीरसागर जी ,पंडित शांतिकुमार जी जैसे अनेक विद्वान तैयार हुए ,और इन्ही विद्वानों ने आगे और अनेक विद्यालयों महाविद्यालयों का निर्माण कराया जिसके कारण हम जैसे लाखों बच्चे जो कभी नमोकार मंत्र तक नही जानते थे वह आने वाले कल हजारों को जैन धर्म का मर्म समझाएंगे।
हम सब भी इन सभी विद्वानों को आदर्श बना कर स्वयं जिनधर्म को आत्मसात कर जैन धर्म के प्रचार प्रसार में समर्पित हों सही कामना